वैशाख चौथ व्रत की कहानी

कहानी - 1

एक गाँव में सेठ , सेठानी थे । उनको एक बेटा और उसकी बहन थी । वह बरतन मांजकर पानी डालने नीचे जाती तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें उससे पूछा आज खाने में क्या खाया। तो वह कहती , "बासी कुसी तर बासी ।" एक दिन जब वह बरतन मांज कर पानी फैकने गई तो रोजाना की तरह औरतों ने पूछा कि आज क्या खाया तो फिर उसने यही जवाब दिया "बासी कुसी तर बासी।" उस दिन सेठ के बेटे ने नीचे उतरते हुए उसकी यह बात सुनली और मन में सोचने लगा अभी तो यह ताजा भोजन करके आई है फिर भी इसने दूसरो को बासी कुरसी क्यों बताया । दूसरे दिन उसने माँ से कहकर खीर खाँड का भोजन बनवाया । माँ , बेटा और बहू तीनों ने बड़ी प्रसन्नता से भोजन किया । बहू बर्तन मांजकर पानी को नीचे डालने गई तो पीछे पीछे उसका आदमी भी गया । आज भी हमेशा की तरह औरतों ने पूछा आज क्या खाया तो उसने वहीं जवाब दिया "बासी कुर्सी तर बासी" । उसके आदमी को बहुत गुस्सा आया ? आज तो मेरे सामने खीर खाण्ड का भोजन किया है फिर भी यह बासी कुर्सी बता रही है । इसमें क्या रहस्य है इस बात को समझने के लिए वह रात का इंतजार करने लगा। जब रात हुई और यह कमरे में आई तो उसके आदमी ने पूछा की आज तूने खीर का भोजन किया फिर भी पड़ोसी औरतों को बासी कुसी क्यों बताया। तब बहू मुस्कराकर बोली की आपके दादा-परदादाओं की कमाई है , तो वह बासी कुसी हुई या नहीं । यह सुनकर उसने परदेश जाने की सोच ली तथा सुबह उठकर माँ से बोला माँ में कमाने के लिए परदेश जाऊँगा। माँ ने कहा अपने पास बहुत धन है । तुझे परदेश जाने की क्या आवश्यकता है । लेकिन बेटे के जिद करने पर माँ ने परदेश जाने की स्वीकृति दे दी ।

वह कमाने के लिए परदेश चला गया । वहाँ उसे एक सेठ के यहाँ नौकरी मिल गई , कुछ ही समय में वह सारा काम काज करने लग गया। सेठ अपना सारा कारोबार उसे सौंपकर स्वयं तीर्थ यात्रा करने चला गया। इधर सास ने यह से कह रखा था कि दीये की बुझावे तो चूल्हे की मत बझाना और चूल्हे की यूझ जावे तो दिये की मत बुझाना । लेकिन एक दिन दोनों अग्नि बुझ गई । तो बहु पड़ोस में अग्नि लेने गई उसने देखा कि वहाँ पड़ोस की औरतें किसी माता का पूजन कर रही है । यह देखकर उसने पूछा आप किस माता का पूजन कर रही हैं । मुझे भी बताओं कि यह किसका व्रत है तथा इसके करने से क्या फल होता है ? तो उनमे से एक बोली हम चौथ माता का व्रत व पूजन कर रही हैं । बिछुड़े का मिलन होता है , निपुत्री को पुत्र प्राप्त हो जाता है । इस पर बहु ने कहा कि मेरे भी पति को परदेश गये काफी समय हो गया है , मैं भी चौथ माता का व्रत करना चाहती हूँ । लेकिन मेरी सास मुझे बाहर आने ही नहीं देती तब मुझे कैसे पता लगेगा की चौथ कब है ? इस पर औरतों ने कहा कि तुम रोजाना एक डिबिया में गेहूं का दाना रखती जाना जिस दिन तीस दाने पूरे हो जावें उसी दिन व्रत रखके शाम को चौथ माता की पूजा करके चन्द्रमा को अर्घ्य देकर फिर खाना खा लेना । साहुकार की बहु कहे अनुसार व्रत करने लग गई व्रत करते करते काफी समय बीत गया । तो चौथ माता ने सोचा कि यदि इसकी नहीं सुनी अपने को कोई पूजा नहीं तब चौथ माता ने साहुकार के बेटे को सपने में जाकर कहा कि सरकार का बेटा सो रहा है या जाग रहा है । उसने कहा न सो रहा है न जाग रहा है चिन्ता में पड़ा है। इस पर चौथ माता ने कहा कि अब चिन्ता छोड़ और तेरे पर जा कर सब की सुध ले। उसने कहा कि मैं कैसे जाऊँ मेरा कारोबार बहुत फैला हुआ है । तब चौथ माता बोली सुबह उठकर नहा धोकर दुकान जा कर चौध बिन्दायक जी का नाम ले कर घी का दीपक जलाना तेरा सारा काम सुलझ जायेगा। सुबह उसने वैसा ही किया देखते-देखते ही सारा हिसाब किताब हो गया और में उसने घर जाने की तैयारी कर ली । घर को रवाना हुआ तो

रास्ते एक साँप जा रहा था तो उसने साँप को सिसकार दिया। साँप ने गुस्से में आकर कहा कि मैं तो अपनी सो साल की उस पूरी करके मुक्ति पाने जा रहा था , तूने बाधा डाल दो, अब मैं तुझे डसँगा , इस पर साहुकार के बेटे ने कहा कि मैं बारह साल से मेरी माँ व पत्नी से मिलने जा रहा हैं , उनसे मिलने के बाद डस लेना । तब साँप बोला कि तू घर जाकर पंलग पर सो जायेगा तब उसने कहा कि मैं अपनी औरत की चोटी नीचे लटका दूंगा । उस पर चढ़ कर आ जाना । घर पहुंचा तो वह उदास था । बेटा कुछ बोला नहीं लेकिन उसकी औरत होशियार थी सब बात पता करके उसने कमरे की एक सीढ़ी पर दूध , दूसरी पर चूरमा , बालू रेत , इत्र, फूल आदि सात सीढ़ियों में सात वस्तु रख दी । आधी रात को फुफकारता हुआ सांप आया और सभी वस्तुओं का आनन्द लेकर खश हुआ लेकिन वचनों से बंधा हुआ था सो डासना तो था । चौध चिन्दायक जी ने सोचा कि इसकी रक्षा नहीं की तो कलयुग में अपने को कौन पूजेगा। चौथ माता तलवार बनी विन्दायक जी ढाल बने । और जैसे ही साँप डसने लगा तो उसे मार दिया । साहुकार के बेटे को नींद नहीं आ रही थी। साँप के मरते ही उसने अपनी पत्नी को उठाया और चौपड़ पासे खेलने लगा । सुबह देर तक बेटा बहु उठे नहीं तो माँ ने कहा बेटा तो धका आधा पर वह क्यों नहीं उठी । जाकर देखा तो खून ही खून हो रहा था उसने कहा मेरे बेटे बहू को किसी ने मार दिया । दब से बैट बोला मां हमारा वरी दुश्मन सर है , वहाँ राफाई करावो तक हम आयेंगे। माँ ने वहां सफाई करवाई वे बाहर आये।दो आकर मां से पूछा माँ मेरे पीछे से किसी ने कोई र् यक्या ? कि मैंने किया , इस पा सास ने कहा कि तूने क्या किया जुझ ैंसज च समय का खाना देती थी। वह बोली में महिने में एक हीथ का द्ृत थी। सुबह का खाना पानी वाली को देती दूसरी बार का गाय के बछडे को खिलाती तीसरी बार का ऊटीयाणा में गाड देती व दौथी बार का पूजा करके चन्द्रमा देखकर फिर खाती थी। मैंने पूजा के लिए बदिया की दुकान से घी गुड़ मंगवाया सो उसका जाकर हिसाब करी । सास ने पानी वाली से पूछा तो उसने कहा कि

महिने में एक दिन मुझे ादेवी थी । बछड़े से पूछा तो उसके मुँह से फेफ के फूल गिरे । उटीयाणा खोदा तो रोटी के सोने के चक्कर निकले । बनिया से पूछा तो उसने भी कहा कि महीने में एक बार मेरे से घी गुड़ मंगवाती थी फिर दह ने कहा कि मुझे अब वैशाख की चौथ का उद्यापन करना है । सास बहु ने चौथ माता का व्रत व उद्यापन धूमधाम से किया और आराम से जीवन बिताया । हे चौथ माता उस पर प्रसन्न हुई जैसी सब पर प्रसन्न होता और सभी की मनोकामना पूरी करना । अमर सुहाग देना।

कहानी - 2

एक बुढ़िया माई थी। उसके गावलियो बचलियो नाम को बेटो हो। बुढ़िया माई बेटा के लिए बारह महीनों की बारह चौथ करती। बेटा जंगल से लकड़ी लाता, दोनों माँ बेटा उनको बेचकर गुजरा करते थे। बुढ़िया माई रोजाना लकड़ियों में से दो लकड़ी अलग रख लेती, और चौथ के दिन बेटा से छुपकर बेचकर सामान लेकर आती। फिर पांच चूरमा के पिंड बनाती। एक बेटा ने खिलाती, एक आप खाती, एक चौथ माता के चढाती व दो बांट देती।

एक चौथ के दिन बेटा अपनी पड़ोसन के घर गया। उसने चूरमा के लड्डू बना रखे थे। तो उसने पूछा कि, आज क्या है, सो थे चूरमा बनाया है। पड़ोसन बोली की मैंने तो आज ही बनाया है, तेरी माँ तो हर चौथ के दिन बनावे है। तुमको आज दिया था क्या? बेटा बोला दिया तो था ,पड़ोसन बोली की तुम लकड़ियां लेकर आते हो जिसमे से तेरी माँ छुपाकर बेचकर चूरमा बनावे है। बेटा माँ के पास गया। बोला की मैं तो इतनी मेहनत से

लकड़ियाँ लेकर आता हूँ, तुम चूरमा कर के खाती हो। तुम मुझको छोड़ दो या चौथ माता को। तो बुढ़िया बोली बेटा में तो तेरे लिए ही व्रत करती हूँ, सो तुमको भले ही छोड़ दूँ लेकिन चौथ माता को नहीं छोड़ सकती। तब बेटे ने घर छोड़ने का फैसला किया। तो माँ बोली की तुम जा तो रहे हो लेकिन मेरा हाथ का ये आखा लेकर जा तेरे ऊपर जो भी संकट आएगा चौथ माता के नाम पर इन्हे पोआर देना। संकट दूर हो जायेगा। बेटा ने सोचा की है तो झूटी बात लेकिन बात रखने के लिए ले लेवा।

घर से चला थोड़ी दूर गया होगा और देखता है कि, खून की नदी बह रही है। किधर से भी रास्ता नहीं था। तब उसने माँ के दिए आखा पोआर के बोला कि, हे चौथ माता अगर ये नदी सुख कर रास्ता हो जाये तो तुम सच्ची हो। इतने में ही नदी सुख कर रास्ता हो जाता है। थोड़ा आगे चलने पर तो रात होने लगी और सुनसान जंगल आ गया। तब आखा पोआर कर बोला कि, हे चौथ माता मने रास्ता मिल जावे नहीं तो ये जानवर मुझे खा जायेंगे। इतने में ही रास्ता मिल गया। आगे एक राजा की नगरी में गया। राजा हर महीने एक आदमी की बलि देता था। वह एक बुढ़िया के घर में गया तो देखता है कि, बुढ़िया माई रोटी बनाते हुए रो रही थी। तब उसने पूछा की माई तुम रो क्यों रही हो। बुढ़िया बोली की मेरे एक ही बेटा है, और आज वो राजा की बलि चढ़ जायेगा। मैं ये रोटी उसके लिए बना रही हूँ। वो बोला कि माई ये रोटी मुझे खिला दो। मैं तेरे बेटे के बदले चला जाऊंगा। माई बोली रोटी खिला दूंगी लेकिन तुझे कैसे भेज दूँ। उसने उसे रोटी खिला दी। रात में सोते समय बोला कि, राजा का बुलावा आये तो मेरे को जगा देना। आधी रात को बुलावा आया। बुढ़िया माई सोचने लगी की पराये पूत ने कैसे बलि चढ़ा दूँ। पर इतने में ही वह जग गया। और जाने लगा, और बुढ़िया माई से बोला की मेरी पोटली और लाठी रखी है। बुढ़िया माई सोची की आज तक ही कोई वापस नहीं आया। ये कैसे आएगा ? राजा का आदमी उसे साथ लेकर चला गया। वहाँ पर उसे कच्चे घड़े पकने वाले कुंड (आवा) में चुन दिया।

जब वो चुना जा रहा था, तो उसने आखा पुआर कर कहा कि, हे चौथ माता दो संकट टाल दिये ये भी तुम ही टालो। इतने में आवा पक कर तैयार हो गया। दो तीन दिन बाद अ◌ावा के पास बच्चे खेल रहे थे। बच्चों ने खेल खेल में आवा पर कंकरी मारी तो उसमें से आवाज आयी। बच्चों ने राजा के आदमियों के पास जाकर कहा कि अ◌ावा पक गया। राजा के आदमियों ने सोचा कि छ महीने में पकने वाले आवा इतनी जल्दी कैसे पक गया। उन्होंने ये बात को बताई। राजा ने जाकर देखा तो सारे बर्तन सोना चांदी के कलस हो गए। वे बर्तन उतारने लगे तो अंदर से आवाज आई कि, धीरे धीरे उतारना अंदर मानस है। राजा ने सोचा की इसमें से पहले तो कभी कोई ऐसी आवाज नहीं आई। राजा ने पूछा की कोण हो तुम। तो उसने अंदर से ही कहा कि, में तो वो ही हूँ, जिसे अ◌ापने तीन दिन पहले इसमें चुनकर बलि ली थी। उन्होंने खोलकर देखा तो अंदर वो ही आदमी है, जिसे तीन दिन पहले उन्होंने इस अ◌ावा में चुनकर बलि चढ़ाया था। उन्होंने सारी बात बताई। उसे महल ले जाया गया। राजा ने पूछा की तुम कोण हो, और बच कैसे गए? तो उसने कहा कि, मेरी माँ चौथ का व्रत करती थी, उसी की वजह से बच गया। तब राजा ने कहा की ये झूट है। इसकी परीक्षा लेनी होगी।

राजा ने दो घोड़े मंगवाए। एक पर स्वयं चढ़ गया और दूसरे पर उसको चढ़ा दिया। उसके हाथों और पैरों में जंजीर डाल दी गयी। राजा ने कहा की अब अपन जंगल की तरफ चलते है, अगर ये जंजीरें खुल कर मेरे हाथ पैरों में आ जाएँगी तो तुम्हारी माँ की चौथ माता सच्ची है। थोड़ी दूर चलने पर ऐसा ही हो गया। राजा के हाथ पैरों में जंजीरें जकड़ गयी। फिर उस लड़के ने बड़ी मुश्किल से राजा को वापस राजमहल पहुँचाया और जाने लगा। तब राजा ने उसे रोकने के आदेश दिए। फिर राजा ने उसे अपनी बेटी के साथ विवाह करने के लिए कहा तो उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राजा ने उसे वही महल में ही रहने के लिए अलग से सारे साधन उपलब्ध करवा दिए। वह राज काज में सहयोग करने लगा।

कुछ महीनो बाद उसे घर की याद आेई। एक दिन मौसम बहुत ही खराब हो रखा था चारों और बिजलिया कड़क रही थी। उसे अपनी माँ की याद आयी। तो उसने अपनी पत्नी से कहा की आज तो बिजली मेरे गाँव की तरफ चमक रही है। तो उसकी पत्नी यानि राजा की बेटी ने कहा कि, आप के गाँव भी है क्या? तो उसने बताया की हाँ। उसने अपनी माँ के बारे में बताया। फिर कहा कि गाँव चलेंगे। दूसरे दिन सुबह वे गाँव के लिए रवाना हुए तो राजा ने खूब सारा धन देकर उन्हें विदा किया। गाँव के समीप पहुँचने पर लोगों को पता चल गया। उसकी माँ से बुढ़ापे में लकड़ियां तो कटती नहीं थी इसलिए गोबर के उपले बनाकर उन्हें बेचकर जीवन यापन कर रही थी। वह उपले बीन कर ला रही थी, तो उसी पड़ोसन ने बतया की बुढ़िया माई तेरे बेटे बहु आ रहे है। तो उसने कहा की मेरे भाग्य में बेटे बहु कहाँ है ? एक बेटा था जिसे भी तुमने लगा भुजा के निकाल दिया। तो उसने कहा की में सच बता रही हूँ। विश्वास नहीं हो तो देख लो। बुढ़िया ने छत पर जाकर देखा तो सच में गाँव की तरफ एक लश्कर आ रहा था। घर आकर बेटे बहु ने पाँव छुए। बेटे ने कहा की माँ तेरी चौथ माता के प्रभाव से मैं आज जिन्दा हूँ। उसी दिन उसने पुरे गाँव में हरकारा करवा दिया की कल मेरे घर पर सामूहिक भोजन है। दूसरे दिन सबको भोजन करने के बाद खूब सारे उपहार देकर कहा चौथ का व्रत करे। चौथ माता जैसा उस बुढ़िया माई और उसके बेटे को संकट से बचाया वैसे सबको बचाना। पढ़ने वाले को, सुनंने वाले को, और फॉरवर्ड करने वाले को और उनके परिवार को।

All PDF Collection
PDF Seva